International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: **3049-2017**
IJMH 2026; 3(1): 50-54
© 2026 IJMH
www.themultijournal.com

Received: 02-01-2026
Accepted: 21-01-2026
Publish : 22-01-2026

**उमा पाराशर**
शोधार्थी,
हिन्दी अध्ययन शाला एवं शोध केंद्र,
महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड-विश्वविद्यालय

**शोध निर्देशक**
डॉ. बृजमोहन द्विवेदी
हिन्दी अध्ययन शाला एवं शोध केंद्र,
महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड-विश्वविद्यालय

**Correspondence:**
**उमा पाराशर**
शोधार्थी,
हिन्दी अध्ययन शाला एवं शोध केंद्र,
महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड-विश्वविद्यालय

# डॉ. सुरेन्द्र सिंह चौहान के साहित्य का पाठ विश्लेषण

**उमा पाराशर, डॉ. बृजमोहन द्विवेदी**

## सारांश

डॉ. सुरेन्द्र सिंह चौहान समकालीन हिंदी साहित्य के एक महत्वपूर्ण रचनाकार हैं। डॉ. चौहान एक चिकित्सक होने के साथ– साथ संवेदनशील साहित्यकार हैं, जिनकी रचनाओं में सामाजिक यथार्थ, मानवीय पीड़ा, जीवन संघर्ष और नैतिक द्वंद की सशक्त अभिव्यक्ति मिलती है। डॉ. चौहान की रचनाओं में समाज व्यक्ति और समय की जटिलताओं का सजीव चित्रण मिलता है। डॉ. चौहान की रचनाएँ सामाजिक विषमताओं , भ्रष्टाचार और शोषण के खिलाफ जूझने की प्रेरणा देती है। डॉ. चौहान के लेखन में आध्यात्मिक चेतना के साथ– साथ वैचारिक पुष्टता और सामाजिक स्थिति को गहराई से विश्लेषित करने की अद्भुत क्षमता है। डॉ. चौहान की पुस्तकों में उनके अनुभव के विस्तार को साफ तौर पर महसूस किया जा सकता है। डॉ. चौहान स्नेह के प्रतिमूर्ति हैं उनकी आँखों में समाज की पूरी संरचना और पीड़ा झांकती है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य डॉ. चौहान के साहित्य का पाठ विश्लेषण करते हुए उनकी रचनाओं की विषयवस्तु, शिल्प, भाषा– शैली तथा वैचारिक दृष्टि का अध्ययन करना है। यह शोध डॉ. सुरेन्द्र चौहान के साहित्यिक योगदान को रेखांकित करते हुए समकालीन हिन्दी साहित्य में उनके महत्व को स्थापित करता है तथा भविष्य में उनके साहित्य पर होने वाले अध्ययन के लिए आधार प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन पाठ-विश्लेषण एवं वर्णनात्मक शोध पद्धति पर आधारित है।

## कुंजी शब्द

डॉ. सुरेन्द्र सिंह चौहान, समकालीन हिन्दी साहित्य, सामाजिक यथार्थ, मानवीय संवेदना, कथ्य शिल्प, काव्य साहित्य, साहित्यिक मूल्यांकन।

## प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य में किसी भी रचनाकार के साहित्यिक अवदान को सम्यक् रूप से समझने के लिए उसके साहित्य का पाठ-विश्लेषण अत्यंत आवश्यक माना जाता है। पाठ-विश्लेषण केवल रचना की विषयवस्तु तक सीमित नहीं रहता, बल्कि उसमें निहित संवेदना, शिल्प, भाषा, दृष्टि और सामाजिक संदर्भों को उजागर करता है। आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में अनेक ऐसे साहित्यकार हुए हैं, जिनका लेखन उनके जीवन– अनुभवों से गहरे रूप से जुड़ा रहा है। डॉ. सुरेन्द्र सिंह चौहान ऐसे ही साहित्यकार हैं, जिनका साहित्य उनके जीवन और पेशे से प्रत्यक्ष रूप में संबद्ध दिखाई देता है।

बुंदेलखंड क्षेत्र में मसीहा के रूप में सम्मानित डॉ. सुरेन्द्र सिंह चौहान पेशे से चिकित्सक रहे हैं। चिकित्सीय जीवन ने उन्हें मानव जीवन की गहन सच्चाइयों से प्रत्यक्ष रूप से परिचित कराया। रोग,पीड़ा, असहायता, मृत्यु बोध और संघर्ष उनके दैनिक जीवन के अनुभव का हिस्सा रहे है। यही अनुभव उनके साहित्य में यथार्थ और संवेदना के रूप में अभिव्यक्त होते हैं।

**डॉ. सुरेन्द्र चौहान का साहित्यिक परिचय-** डॉ. सुरेन्द्र सिंह चौहान समकालीन हिंदी साहित्य के एक महत्वपूर्ण रचनाकार, कथाकार, कवि तथा आलोचक है। उनके साहित्य का केंद्रीय सरोकार सामान्य

जन जीवन, उनकी समस्याएं, संघर्ष और मानवीय मूल्यों की रक्षा है। वे आदर्शवाद से अधिक यथार्थवाद को महत्व देने वाले रचनाकार है। डॉ. चौहान के कथा साहित्य में विशेष रूप से उनका कहानी संग्रह **"झरोखा"** समकालीन हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण कृति के रूप में स्वीकार किया जाता है। इस संग्रह की कहानियां जैसे– **बिटिया की शादी, झरोखा, बड़प्पन** आदि आम आदमी के जीवन से जुड़ी समस्याओं, संवेदनाओं और संघर्षों को सजीव रूप में प्रस्तुत करती हैं।

वहीं उनका काव्य साहित्य भी सामाजिक चेतना, मानवीय संवेदना और प्रतिरोध की भावना से ओत– प्रोत है। उनके काव्य संग्रह जैसे– रेत कण, अज्ञात चितवन आत्म चिंतन के साथ– साथ समाजिक अन्याय के विरुद्ध एक सशक्त स्वर प्रदान करती है। उनकी कविता **"चेतावनी"** में एक पंक्ति हैं–

"इंसान की प्रदूषित जीवन शैली में परिवर्तन अनिवार्य है"

जिसमें डॉ. चौहान सामाजिक चेतना को चित्रित करते हैं यह पंक्ति समाज को आत्म-मंथन करने के लिए प्रेरित करती है कि कैसे हमारी आधुनिक जीवनशैली प्रकृति और मानवीय मूल्यों के विरुद्ध जा रही है। इसके अतिरिक्त कविता **"दर्द"** में एक पंक्ति–

आज भी मानव पूरा पर अधूरा,
जाना न जीवन की परिभाषा।

के माध्यम से मानवीय संवेदना को प्रस्तुत करते है जिसमें आधुनिक मनुष्य की आंतरिक रिक्तता, भटकाव और अधूरेपन को अत्यंत संवेदनशील ढंग से व्यक्त करती है।

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य डॉ.सुरेन्द्र सिंह चौहान के साहित्यिक व्यक्तित्व और रचनात्मक दृष्टि का समग्र अध्ययन करना है। इस शोध के माध्यम से उनके कथा एवं काव्य साहित्य का पाठ-विश्लेषणात्मक मूल्यांकन करते हुए यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि उनका साहित्य समकालीन सामाजिक यथार्थ, मानवीय संवेदना और वैचारिक चेतना को किस प्रकार अभिव्यक्त करता है, साथ ही उनके साहित्य में निहित साहित्यिक सरोकारों, यथार्थवादी दृष्टिकोण और मानवीय मूल्यों की पहचान कर समकालीन हिन्दी साहित्य में उनके स्थान और योगदान का आकलन करना इस अध्ययन का उद्देश्य है।

## शोध प्रविधि

यह शोध पत्र पाठ– विश्लेषण एवं गुणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। शोध के लिए प्राथमिक स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों के अंतर्गत डॉ. चौहान की मौलिक रचनाएं विशेष रूप से उनके कहानी संग्रह तथा उनके काव्य संग्रह को शामिल किया गया है। शोध की प्रक्रिया में पाठ– विश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक एवं आलोचनात्मक शोध पद्धतियों का प्रयोग किया गया है।

## पाठ विश्लेषण एवं विवेचन

**साहित्यिक पृष्ठभूमि**- डॉ. चौहान व्यवसाय से चिकित्सक हैं, विचारों से साहित्यकार तथा चिंतन से दार्शनिक हैं ; हिन्दी, अंग्रेजी, ब्रज और बुंदेली के पुरोधा हैं। डॉ. चौहान की कविताओं में गहनता है, कहानियों में कसावट है तथा साहित्य को इन्होंने साध लिया है। डॉ. चौहान के साहित्य में ग्रामीण एवं कस्बाई जीवन, निम्न और मध्यम वर्ग की समस्याएं, आर्थिक विषमता तथा नैतिक संकटों का व्यापक चित्रण मिलता है।डॉ. चौहान ने व्यक्तिगत अनुभवों को सामाजिक संदर्भों से जोड़कर प्रस्तुत किया है।

डॉ. चौहान की कविताएं मूलतः धर्म और विश्वास पर आधारित होती है। डॉ. चौहान प्रबुद्ध एवं सचेत रचनाकार हैं इनका साहित्य इसी व्यापक साहित्यिक पृष्ठभूमि में विकसित हुआ है। उनका लेखन साहित्य को यथार्थवादी और मानवीय चेतना से गहरे रूप में जुड़ा हुआ है।

**समकालीन हिन्दी साहित्य में डॉ. सुरेन्द्र सिंह चौहान का स्थान-** समकालीन हिंदी साहित्य में डॉ. सुरेन्द्र सिंह चौहान का स्थान एक यथार्थवादी और सामाजिक सरोकारों से जुड़े रचनाकार के रूप में महत्वपूर्ण हैं। वे उस साहित्यिक परंपरा से संबद्ध हैं जिसमें साहित्य को समाज परिवर्तन का माध्यम माना जाता है। उनके साहित्य में संवेदना की गहराई स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है।

डॉ. चौहान पेशे से चिकित्सक रहें हैं। बुंदेलखंड क्षेत्र में **"मसीहा"** के रूप में सम्मानित हैं। विज्ञान के विद्यार्थी होने पर भी सदैव साहित्य से जुड़े रहे; चाहे वह उनके द्वारा लिखे गए नाटक हों। उनकी रचनाओं में उनके पात्र न तो आदर्शीकृत हैं न ही अतिरंजित, बल्कि वे जीवन की वास्तविक परिस्थितियों से जूझते साधारण मनुष्य हैं। यही विशेषता उन्हें समकालीन हिंदी साहित्य में एक विश्वसनीय और प्रामाणिक रचनाकार के रूप में स्थापित करती है।

**डॉ.सुरेन्द्र सिंह चौहान के कथा साहित्य का आलोचनात्मक मूल्यांकन (कहानी संग्रह- "झरोखा" के संदर्भ में)**-डॉ. सुरेन्द्र सिंह चौहान का कहानी संग्रह "झरोखा" सामाजिक जीवन की विविध विसंगतियों, मानवीय संवेदनाओं और आम जन के संघर्षों का सशक्त दस्तावेज है। डॉ. चौहान का प्रमुख कहानी संग्रह "झरोखा" उनके साहित्यिक व्यक्तित्व का प्रतिनिधि ग्रंथ है। डॉ. चौहान ने "झरोखा" कहानी संग्रह में वर्तमान की जो ज्वलंत समस्याएं हैं जैसे– सांप्रदायिकता, पाखंड, आतंक, स्वार्थ, आक्रोश, लूट, धोखा, भ्रष्टाचार, स्तरहीनता आदि तथाकथित कुकृत्यों को डॉ. चौहान ने अपनी कहानियों में बेबाक शैली में अभिव्यक्त करने का निर्भय प्रयास किया है। "झरोखा" कहानी संग्रह में डॉ. चौहान ने मानव जीवन की भावनाओं, संवेदनाओं, व्यथाओं को संजोकर कहानियों के

माध्यम से समाज तक पहुंचाने का प्रयास किया है। "झरोखा" केवल कहानियों का संग्रह नहीं बल्कि समाज और जीवन को देखने का एक दृष्टिकोण भी प्रस्तुत करता है।

- **कथ्य (विषयवस्तु)** "झरोखा" संग्रह की कहानियों की विषयवस्तु सामाजिक यथार्थ पर आधारित है. इनमें ग्रामीण और कस्बाई जीवन, आर्थिक असमानता,पारिवारिक विघटन, नैतिक संकट, स्त्री जीवन की पीड़ा तथा हाशिए पर खड़े वर्गों की समस्याएं प्रमुख रूप से उभरकर सामने आती हैं। डॉ. चौहान ने अपने कहानी संग्रह में जीवन का यथार्थ बखूबी ढंग से प्रस्तुत किया है। "झरोखा" कहानी संग्रह की कहानियां सामान्य जन– जीवन की पीड़ाओं और संघर्षों को संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करती है।
- **पात्र चित्रण** डॉ. सुरेन्द्र सिंह चौहान के कथा साहित्य की एक प्रमुख विशेषता उनका पात्र चित्रण सशक्त है।"झरोखा" कहानी संग्रह के पात्र यथार्थ जीवन से उठाए हुए प्रतीत होते हैं। कहानियों के पात्र साधारण हैं, किंतु उनके अनुभव असाधारण परिस्थितियों से जुड़े हुए हैं। लेखक ने अपने पात्रों को नायक या खलनायक के रूप में नहीं, बल्कि परिस्थितियों से जूझते सामान्य मनुष्य के रूप में प्रस्तुत किया है।
- **सामाजिक यथार्थ का चित्रण** "झरोखा" कहानी संग्रह की कहानियों में सामाजिक यथार्थ का चित्रण अत्यंत प्रामाणिक और सशक्त है। डॉ. चौहान समाज की उन सच्चाइयों को सामने लाते हैं जिन्हें प्रायः अनदेखा कर दिया जाता है। डॉ. चौहान की कहानियों में गरीबी, शोषण, सामाजिक असमानता, पारिवारिक तनाव और मानवीय संबंधों में आई दरारों का यथार्थवादी चित्रण मिलता है। झरोखा संग्रह की कहानियां जीवन के भीतरी यथार्थ को उजागर करती है। लेखक ने अपनी रचनाओं में जीवन के यथार्थ को ईमानदारी से प्रस्तुत किया है। डॉ. चौहान का साहित्य सामाजिक चेतना को जाग्रत करने का कार्य करता है।
- **शिल्प और भाषा शिल्प** की दृष्टि से डॉ. चौहान की कहानियां सुसंगठित और प्रभावशाली है। उनका शिल्प कथ्य के अनुरूप है और कहानी की संवेदना को और अधिक सघन बनाता है। डॉ. चौहान की कहानियां घरेलू एवं ग्रामीण वातावरण को साकार करती है। आंचलिक भाषा, बुंदेलखंडी है। इस भाषा के कारण लोग अपने आप को बंधा हुआ पाते हैं।
- **प्रतिनिधि कहानियों का विश्लेषण** "झरोखा" कहानी संग्रह की प्रतिनिधि कहानियां समकालीन जीवन की जटिलताओं को उजागर करती हैं "झरोखा" शीर्षक की कहानियां सामाजिक विषमता, पारिवारिक संबंधों की जटिलता,गरीबी,शोषण,अकेलापन और मानवीय रिश्तों को केन्द्र में रखती हैं और मनुष्य की आंतरिक पीड़ा को अभिव्यक्ति करती है। जैसे– बिटिया की शादी, झरोखा, बड़प्पन, बुंदेलखंड की सुखवती, मैनेजर साहब, कच्चे धागे,संतति आदि सामाजिक यथार्थ, पारिवारिक संबंधों और मानवीय संघर्षों को केंद्र में रखकर लिखी गई है।
- **मूल्यांकन** समग्र रूप से कहा जा सकता है कि डॉ. सुरेन्द्र सिंह चौहान का कहानी संग्रह समकालीन हिन्दी कथा साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसमें कार्य की गहराई, पात्रों की प्रामाणिकता, सामाजिक यथार्थ का सशक्त तथा शिल्प– भाषा की सहजता का प्रभावशाली समन्वय देखने को मिलता है। उनका साहित्य न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि सामाजिक संदर्भों में भी उसकी प्रासंगिकता स्पष्ट रूप से सिद्ध होती है।

**"वंडरलिन" कहानी संग्रह का आलोचनात्मक मूल्यांकन**– डॉ. सुरेन्द्र सिंह चौहान का "वंडरलिन"कहानी संग्रह समकालीन जीवन की जटिलताओं, मानवीय संवेदनाओं और नैतिक द्वंद्वों को अभिव्यक्त करने वाला महत्वपूर्ण कथा– संग्रह है। इसकी कहानियां सामान्य जन जीवन से जुड़ी घटनाओं को आधार बनाकर सामाजिक यथार्थ, मनोवैज्ञानिक संघर्ष और जीवन– दर्शन को सामने लाती है। लेखक की दृष्टि अनुभवजन्य और संवेदनशील है, जो पाठक को जीवन की अनिश्चितताओं और विडंबनाओं से रूबरू कराती है।

- **"वंडरलिन" कहानी संग्रह का कथ्य मुख्यतः** मानवीय संबंधों, गरीबी, कृतज्ञता, सत्य– असत्य, समय की परिवर्तनशीलता, अपराध– बोध और आत्मचिंतन के इर्द– गिर्द घूमता है। नमक और राखी जैसी कहानियां संबंधों की नैतिकता और भावनात्मक गहराई को रेखांकित करती है, जबकि गरीबी, निर्वाह और गरीबी एवं चिंतन सामाजिक विषमता और जीवन संघर्ष को यथार्थवादी दृष्टि से प्रस्तुत करती है। शीर्षक कहानी "वंडरलिन" पूरे कहानी संग्रह की केंद्रीय चेतना को समेटते हुए जीवन की अप्रत्याशिता और विस्मयकारी मोड़ो का प्रतीक बनती है।
- **पात्र चित्रण** की दृष्टि से वंडरलिन की कहानियां अत्यंत सजीव हैं। पात्र साधारण जीवन से उठाए गए है, जिनकी कमजोरियां, दुविधाएं और मानसिक द्वंद उन्हें विश्वसनीय बनाते हैं।
- **सामाजिक एवं दार्शनिक** दृष्टि से यह संग्रह उल्लेखनीय है। कहानियां सामाजिक पाखंड, दिखावटी नैतिकता और समय के बदलते मूल्यों पर सूक्ष्म टिप्पणी करती है, साथ ही जीवन की क्षणभंगुरता और आत्मबोध की आवश्यकता को भी रेखांकित करती है। लेखक का स्वर उपदेशात्मक न होकर के चिंतनशील है।
- **भाषा और शिल्प** सरल सहज और प्रभावपूर्ण है। संवादों की स्वाभाविकता और वर्णन की संक्षिप्तता कथाओं को प्रभावी बनाती है।प्रतीकों और संकेतों का प्रयोग सीमित किंतु सार्थक है, जो कथ्य को गहराई प्रदान करता है।

● समग्र रूप में "वंडरलिन" कहानी संग्रह संवेदनशील यथार्थवाद, मानवीय सरोकार और दार्शनिक चेतना का संतुलित समन्वय है। यह संग्रह डॉ. चौहान को समकालीन हिन्दी कथा साहित्य में विचारशील, अनुभूतिपरक और सामाजिक रूप से सजग कथाकार के रूप में स्थापित करता है।

**डॉ. सुरेन्द्र सिंह चौहान के काव्य संग्रह का आलोचनात्मक मूल्यांकन-** (काव्य संग्रह "रेतकण" के संदर्भ मे )– काव्य संग्रह "रेतकण" डॉ. सुरेन्द्र सिंह चौहान का वैचारिक, नैतिक और संवेदनात्मक काव्य-दृष्टि का प्रतिनिधि संग्रह है। इसमें संकलित समस्त कविताएं जीवन के सूक्ष्म अनुभवों, आत्मसंघर्ष, सामाजिक यथार्थ, आध्यात्मिक चेतना तथा मानवीय मूल्यों को केंद्र में रखती है।

● विषयगत एकरूपता रेतकण का ये संग्रह की सभी कविताओं में जीवन– दर्शन प्रमुख तत्व के रूप में उपस्थित है। प्रार्थना, जीवन सरिता, अर्जन, योग पथ, सत्य, क्यों नहीं जैसी कविताएं आत्मचिंतन और आध्यात्मिक चेतना को स्वर देती है, जबकि अंतः पीड़ा,दिल को धोखा,भूल जैसी रचनाएं मनुष्य के आंतरिक द्वंद और पीड़ा को उभारती है। कवि बाह्य यथार्थ और आंतरिक संवेदना– दोनों को समान महत्व देता है।

● **मानवीय संवेदना और नैतिक दृष्टि–** रेतकण की कविताएं करुणा, सहानुभूति और मानवीय सरोकारों से अनुप्रमाणित है। कवि जीवन की विसंगतियों को देखकर निराश नहीं होता, बल्कि पाठक को चेतना और आत्मबल की ओर ले जाता है। चेतावनी, सावधान, भय, क्यों जैसी कविताएं नैतिक सजगता उत्पन्न करती है।

● **प्रतीक और बिंब संग्रह में प्रयुक्त प्रतीक–** रेत, प्रकाश, फूल, पथ, दीप, सरिता– जीवन की क्षणभंगुरता, संघर्ष और निरंतरता के द्योतक है। ये प्रतीक कविताओं को गहराई प्रदान करते हैं।

● **भाषा और शिल्प–** सभी कविताओं की भाषा सरल,सहज, और भावप्रधान है। कवि अलंकरण या शाब्दिक जटिलता से बचते हुए विचारों को स्पष्टता पर बल देता है। मुक्त छंद का प्रयोग कविताओं को स्वाभाविक प्रवाह और आत्मीयता प्रदान करता है।

● **प्रेरक और मूल्यपरक स्वर–** संकल्प करें, सफल, महान, लक्ष्य– भेद, परिवर्तन जैसी कविताएं पाठक को सकारात्मक दृष्टि से कर्मशीलता की प्रेरणा देती है। इस प्रकार "रेतकण" केवल भावात्मक नहीं, बल्कि आत्मनिर्माण का काव्य भी बन जाता है।

● **मूल्यांकन– डॉ. सुरेन्द्र सिंह चौहान का काव्य– संग्रह "रेतकण"** समकालीन जीवन की संवेदनाओं, नैतिक मूल्यों और आत्मचिंतन की सशक्त अभिव्यक्ति है। कवि की भाषा सरल, सहज और प्रभावशाली है, जो पाठक से सीधा संवाद स्थापित करती है। समग्र रूप में "रेतकण" संवेदना, दृष्टि और मूल्यबोध की दृष्टि से एक सार्थक और उल्लेखनीय काव्य संग्रह है।

**काव्य-संग्रह "अज्ञात चितवन" का आलोचनात्मक मूल्यांकन–** डॉ. सुरेन्द्र सिंह चौहान का काव्य-संग्रह 'अज्ञात चितवन' समकालीन हिंदी कविता में चेतना, आत्मबोध और मानवीय संवेदना का महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है। इस संग्रह की कविताएँ जीवन के विविध आयामों-सुख-दुख, आशा-निराशा, समय-बोध, सामाजिक विसंगतियों और आध्यात्मिक खोज-को गहनता से अभिव्यक्त करती हैं।

● संग्रह की प्रमुख विशेषता इसका विचारप्रधान और आत्मसंवादी स्वर है। **'सच क्या है?'**, 'मैं मजदूर हूँ', 'राजनीति', 'विषाक्त **वातावरण', 'दर्द', 'अधूरी आस्था'** जैसी कविताएँ सामाजिक यथार्थ और मानवीय पीड़ा को उजागर करती हैं, जबकि **'ध्यान', 'योग-संयोग'**, **'तत्व ज्ञान', 'चेतन शक्ति'** आदि रचनाएँ कवि की आध्यात्मिक चेतना को प्रकट करती हैं। इस प्रकार यह संग्रह बाह्य यथार्थ और आंतरिक अनुभूति के बीच संतुलन स्थापित करता है।

● **भाषा-शैली** की दृष्टि से कविताएँ सरल, प्रवाहमयी और प्रतीकात्मक हैं। कवि अलंकारिक जटिलता से बचते हुए सहज शब्दों में गूढ़ भावों को अभिव्यक्त करता है। प्रश्नवाचक शीर्षक और दार्शनिक संकेत पाठक को आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करते हैं।

● **समग्रतः 'अज्ञात चितवन'** जीवन के अज्ञात पक्षों की खोज करने वाला काव्य-संग्रह है, जिसमें मानवीय संवेदना, सामाजिक चेतना और आध्यात्मिक दृष्टि का समन्वय दिखाई देता है। यह संग्रह डॉ. सुरेन्द्र सिंह चौहान को एक संवेदनशील, विचारशील और प्रतिबद्ध कवि के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

**निष्कर्ष**

डॉ. सुरेन्द्र सिंह चौहान का साहित्य समकालीन हिन्दी साहित्य में मानवीय संवेदना और सामाजिक चेतना का शसक्त उदाहरण हैं। उनके कथा साहित्य में सामाजिक यथार्थ, जीवन– संघर्ष और संवेदनशील पात्र– चित्रण प्रमुख है, जबकि काव्य साहित्य में करुणा, आत्मचिंतन और जीवन– दर्शन की अभिव्यक्ति मिलती है। प्रस्तुत शोध यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि चौहान जी का साहित्य साधारण मनुष्य को साहित्यिक गरिमा प्रदान करता है। डॉ. चौहान के साहित्य पर अभी कोई शोध नहीं हुआ है, इसलिए भविष्य में उनके कथा और साहित्य काव्य साहित्य पर तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक अध्ययन की व्यापक संभावनाएं हैं। साथ ही उनके कथा और काव्य साहित्य में चिकित्सा पेशे से जुड़े अनुभवों, मानवीय

संवेदना और सामाजिक सरोकारों के अंतर्सम्बन्ध पर भी गहन शोध की संभावना है।

**संदर्भ ग्रन्थ सूची–**

चौहान, सुरेन्द्र सिंह | झरोखा | किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश), 1997 |

चौहान, सुरेन्द्र सिंह | रेतकण | स्नेहल प्रकाशन, इलाहाबाद ( उत्तर प्रदेश), 2002 |

चौहान, सुरेन्द्र सिंह | अज्ञात चितवन | स्नेहल प्रकाशन, इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश), 2000 |

चौहान, सुरेन्द्र सिंह | वंडरलिन | स्नेहल प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002 |

चौहान, सुरेन्द्र सिंह | अमृत कलश | स्नेहल प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002 |